आर्थिक संवृद्धि एवं आर्थिक विकास

आर्थिक संवृद्धि economic growth से हमारा अभिप्राय राष्ट्रीय आय के विस्तार से है अतः आर्थिक संवृद्धि में केवल इस बात पर ध्यान दिया जाता है कि क्या किसी कालावधि में इससे पहले के काल की तुलना में मात्रा की दृष्टि से अधिक उत्पादन हो रहा है या नहीं। आर्थिक संवृद्धि एक परिमाणात्मक संकल्पना Quantitative Concept है। इसके विरुद्ध आर्थिक विकास अपेक्षाकृत अधिक व्यापक धारणा है। आर्थिक विकास का क्षेत्र आर्थिक संवृद्धि से कहीं अधिक है। यद्यपि कई अर्थशास्त्री आर्थिक संवृद्धि और आर्थिक विकास को एक दूसरे के पर्यायवाची के रूप में इस्तेमाल करते रहे हैं।

चार्ल्स किंडलबर्गर Charles P. Kindleberger ने इस संबंध में उल्लेख किया है "आर्थिक संवृद्धि का अर्थ अधिक उत्पादन से है, जबकि आर्थिक विकास से अभिप्राय अधिक उत्पादन के अतिरिक्त तकनीकी एवं संस्थानात्मक व्यवस्था में हुए परिवर्तनों से भी है जिनके कारण यह उत्पाद Output निर्मित एवं वितरित किया जाता है।"

आर्थिक संवृद्धि में न केवल अधिक मात्रा में आदानों Inputs के कारण अधिक उत्पादन को शामिल किया जाता है बल्कि इसमें प्रति इकाई आदान के बदले अधिक उत्पादन का समावेश भी है अर्थात आर्थिक

P.T.O

संवृद्धि की धारणा में उत्पादन में समय के साथ होने वाली अधिक कार्यकुशलता को शामिल किया जाता है।

विकास की धारणा इससे कहीं विस्तृत है। इसमें उत्पादन की संरचना में होने वाले परिवर्तन और क्षेत्रानुसार आहरनों के आवण्टन में परिवर्तन को भी शामिल किया जाता है। आर्थिक विकास के बिना आर्थिक संवृद्धि तो सम्भव है, परन्तु आर्थिक संवृद्धि के बिना आर्थिक विकास सम्भव नहीं है, क्योंकि तकनीकी एवं संस्थानात्मक व्यवस्था में परिवर्तन का उद्देश्य राष्ट्रीय आय एवं प्रति वृद्धि की विभिन्न क्षेत्रों और जनसंख्या के विभिन्न वर्गों में सापेक्षतः अधिक न्यायोचित रूप में बांटना है।

जब तक कोई अर्थव्यवस्था अपनी निवार्य आवश्यकताओं से अधिक पैदा नहीं करती तब तक वह देश की जनसंख्या के जीवन-स्तर को उन्नत करने और इसमें आर्थिक न्याय पूर्ण वितरण लाने में सफल नहीं हो सकती, जिससे कि जनसामान्य की वास्तविक आय में वृद्धि हो सके।

आर्थिक विकास की धारणा को व्यवहार किसी समाज में विभिन्न नीति-उद्देश्यों के रूप में ही करना सम्भव है। इस धारणा का आधार समाज द्वारा स्वीकृत वे मूल्य हैं, जिनके आधार पर समाज के विकास की संकल्पना किया जाता है। इसी दृष्टि से आर्थिक विकास गुणात्मक रूप में आर्थिक संवृद्धि से भिन्न है। आर्थिक विकास की किस परिभाषा को सबसे अधिक स्वीकृति प्राप्त हो सकती है।

P.T.O

प्रोफेसर जी० एम० मेयर के अनुसार

"आर्थिक विकास की परिभाषा एक ऐसी प्रक्रिया के रूप में की जा सकती है, जिसके परिणामस्वरूप कोई देश एक लम्बी कालावधि में अपनी वास्तविक प्रति व्यक्ति आय में वृद्धि करता है, परम निर्धनता रेखा के नीचे रहने वाली जनसंख्या में वृद्धि न हो और आय का वितरण और अधिक असमान न हो जाए।"

आर्थिक विकास के भिन्न बातें ~~भिन्न~~ सुव्यक्त होती हैं।

(1) आर्थिक विकास एक प्रक्रिया है → आर्थिक विकास एक ऐसी प्रक्रिया है जिसमें कुछ शक्तियाँ जो एक दूसरे से संबंधित हैं, कारण और कार्य के रूप में क्रियाशील होती है। आर्थिक विकास की परीक्षा एक प्रगतिशील प्रोग्राम के रूप करनी पड़ती है। जिसके फलस्वरूप यह किसी देश की जनसंख्या, विशेषकर निर्धन जनसंख्या के लिए अधिक अर्थपूर्ण सिद्ध हो सकती है। जिसके कारण और परिणाम के आपसी संबंध स्पष्ट हो सकें।

(2) निर्धनता दूर करना आर्थिक विकास का प्रधान लक्ष्य :→ आर्थिक विकास की मूल प्रेरणा राष्ट्रों में निर्धनता दूर करने के लिए राष्ट्रीय आय में वृद्धि को लक्ष्य माना जाता है। राष्ट्रीय आय की वृद्धि-दर जनसंख्या की वृद्धि दर के बराबर है, तो प्रति व्यक्ति आय स्थिर रहेगी। यदि जनसंख्या की वृद्धि दर राष्ट्रीय आय की वृद्धि-दर से अधिक है तो प्रति व्यक्ति आय कम हो जाएगी। इन दोनों परिस्थितियों में जीवन-स्तर स्थिर रहेंगे या गिर जाएँगे। इसे इसे आर्थिक विकास समझना भूल होगी।

विकास किसी एक क्षेत्र या कुछ क्षेत्रों या किसी एक वर्ग या कुछ उच्च वर्गों तक ही सीमित न रहे बल्कि इसका प्रभाव व्यापक रूप में समग्र जनसंख्या पर पड़े। इस प्रकार आधुनिकीकरण की क्रिया का विस्तार होना चाहिए। ताकि पारम्परिक अर्थव्यवस्था को आधुनिक अर्थव्यवस्था में परिवर्तित किया जा सके।

प्रति व्यक्ति आय में वृद्धि को आर्थिक विकास का सर्वोत्तम उपलब्ध सूचक माना जाता है। परन्तु इसे आर्थिक कल्याण या आर्थिक प्रगति का पर्यायवाची समझना उचित नहीं होगा। कुल राष्ट्रीय उत्पाद Gross National product में वृद्धि व्यक्त हुई, परन्तु इनमें अभि भी निर्धनता-रेखा के नीचे रहने वाली जनसंख्या की भारी मात्रा विद्यमान है। इनमें बेरोजगारी बढ़ती जा रही है और आय की असमानताएँ और उग्र हो गयी है। अतः विकास अर्थशास्त्री अब कुल राष्ट्रीय आय की या उत्पाद की बलिवेदी के ही पुजारी नहीं रहे बल्कि प्रत्यक्ष रूप में विकास-प्रक्रिया की गुणवत्ता पर ध्यान केन्द्रित करने लगे है।

कुल राष्ट्रीय उत्पाद का ध्यान रखना भी चाहिए जो स्वयं निर्धनता का ध्यान कर लेगा। अब इसे इसे उलट होना चाहिए और इसमें निर्धनता को समाप्त करने के लिए यह प्रक्रिया कुल राष्ट्रीय उत्पाद का ध्यान कर लेगी। इसमें कुल राष्ट्रीय उत्पाद की संरचना का इसकी वृद्धि दर की अपेक्षा अधिक ख्याल रखना होगा।